वंशानुक्रम व इसका विकास पर प्रभाव

CTET Exam Notes : Child Development and Pedagogy (CDP)

in Hindi Medium

Topic : Influence of Heredity & Environment (वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव)

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक

वास्तव में मानव व्यक्तित्व दो प्रभावी तत्वों वंशानुक्रम व वातावरण की देन है। **कोल तथा ब्रूस** के अनुसार जीव गर्भधारण के समय से ही वंशानुगत क्षमता के अनुसार ही संवेदनशील, सक्रिय रहने वाला, प्रभावी व्यक्तिक के रूप में विकसित होता है। इस विकास के साथ यह शर्त भी है के उसका वातावरण इसके विकास के लिए आवश्यकतानुसार साधन तथा उद्दीपन का प्रावधान करे।

व्यक्तित्व में भिन्नता होने के कई कारण है। पहले तो जीव की अनुवांशिक क्षमताओ में भिन्नता होती है। दूसरे विकास के लिए जुताई गयी सामग्री में भिन्नताओ की कोई सीमा नहीं होती । गिलफोर्ड ने इस दिशा मई काम किया है । उसने एक ही परिवार के सदस्यों की जाँच की व पाया कि वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों का अपना- अपना प्रभाव है।

अवश्य पढ़े - वातावरण व इसका विकास पर प्रभाव

वंशानुक्रम व इसका विकास पर प्रभाव

अर्थ एवं महत्व- प्राणी मात्र में स्वभाविक तौर से कुछ गुण परम्परागत रूप से प्राप्त होते है। इसका अभिप्राय यह है कि बालक रंग, रूप, आकृति, विद्वता आदि में माता-पिता से मिलता है। दूसरे शब्दों में उसे अपने माता-पिता के शारीरिक एवं मानसिक गुण प्राप्त होते है। इसी को हम वंशानुक्रम कहते है।

बी.एन. झा के अनुसार "वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओ का पूर्ण योग है।"

एच.ए. पीटरसन के अनुसाार "व्यक्ति को अपने माता-पिता से पूर्वजों की जो विशेषताएं प्राप्त है उसे वंशक्रम कहते है।"

www.tetsuccesskey.com

कभी-कभी यह देखने को मिलता है कि विद्वान माता-पिता के बालक मूर्ख और मूर्ख माता पिता के बालक विद्वान होते है। इसका कारण यह है कि बालक को न केवल अपने माता पिता के वरन उनके पूर्वजों के भी गुण प्राप्त हो सकते है। प्रत्येक प्राणी को अपने पूर्वजों से तीन प्रमुख गुण प्राप्त होत है:-

1. पूर्वजों और माता पिता की समानता।
2. पूर्वजों और माता पिता की भिन्नता।
3. कुछ असामान्य विभिन्नताएं।

वंशानुक्रम का महत्व:-

1. वंशानुक्रम के कारण ही बालकों में शारीरिक भिन्नता पायी जाती है। बालक के शारीरिक विकास का उसकी शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ता है। इसलिए शारीरिक विकास और वैयक्तिक भिन्नता का पूरा ध्यान रखते हुए शिक्षा व्यवस्था करनी चाहिए। इसे ध्यान में रखकर ही विभिन्न कक्षाओं में विषय वस्तु का निर्धारण किया जाता है।

2. वंशानुक्रम के कारण बालकों की जन्मजात क्षमताओं और योग्यताओं में अन्तर होता है जिससे सीखने की योग्यता में भी अन्तर आ जाता है। कुछ बालक किसी चीज को शीघ्र सीख लेते हैं और कुछ देर से सीख पाते हैं। शिक्षा देते समय बालक की क्षमताओं और सीखने की योग्यताओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए। और इन्हीं के अनुसार शिक्षण विधि का चयन करना चाहिए। इस बात को ध्यान में रखते हुए वर्तमान समय में शिक्षा में अभिक्रमित अनुदेशन की व्यवस्था की गई है। इस पद्धति से बालक अपनी क्षमताओं के अनुसार ज्ञान प्राप्त करता है।

3. बालकों को वंशानुक्रम से कुछ प्रवृत्तियां प्राप्त होती हैं जो वांछनीय तथा अवांछनीय दोनों प्रकार की हो सकती है। वंशानुक्रम के ज्ञान से इन प्रवृत्तियों का अध्ययन करके वांछनीय प्रवृत्तियों का विकास और अवांछनीय प्रवृत्तियों का दमन या मार्गान्तरीकरण किया जा सकता है। इस प्रकार बालक के अभद्र या अवांछनीय व्यवहार को सुधारा जा सकता है।

www.tetsuccesskey.com

4. कुछ बालकों में वंशानुक्रम जनित विकार आ जाते हैं। ऐसे बालक कक्षा में अपने को हीन अनुभव करते हैं। ऐसे बालकों को सहानुभूतिपूर्वक शिक्षा देनी चाहिए।

5. वंशानुक्रम में समानता, भिन्नता और प्रत्यागमन के नियमों के पूर्ण ज्ञान से बालकों को भावना ग्रन्थियों से बचाया जा सकता है। उदाहरणार्थ- प्रत्यागमन का नियम बताता है कि प्रतिभाशाली माता पिता की संतान मन्द बुद्धि हो सकती है। इसके ज्ञान से शिक्षक यह नहीं कह सकता कि तुम्हारे पिता को प्रतिभाशाली हैं और तुम निरे बुद्धू हो। इस प्रकार निर्दोष बालक भावना ग्रन्थियों का शिकार होने से बच जाता है।

6. **वुडवर्थ** के अनुसार, देहाती बालकों की अपेक्षा शहरी बालकों के मानसिक स्तर की श्रेष्ठता कुछ हद तक वंशानुक्रम के कारण होती है। इस बात का ज्ञान होने से शिक्षण को बालकों के मानसिक स्तरों के अनुरूप बनाकर उसे और भी प्रभावी बनाया जा सकता है।

Saba Pasha

Saba Pasha is the founder and CEO of TET Success Key. She created one of the best site for exam preparation.Here you can find latest exam updates and free study material for your exam preparation.